विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -11 - 01 - 2022**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् बच्चों आज वीर शिवाजी के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

शिवाजी राजे की युवा अवस्था

जैसे-जैसे छत्रपति शिवाजी महाराज बड़े होते गए वैसे-वैसे ही शिवाजी पर हिन्दू और मराठा साम्राज्य को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारियां भी आ गई. उन्ही जिम्मेदारियों के साथ शिवाजी की शक्ति और बुद्धिमानी भी बढ़ने लगी. 17 साल की उम्र में वर्ष 1646 में शिवाजी महाराज ने युद्ध करना शुरू किया. युद्ध लड़ते-लड़ते वीर शिवाजी ने तोर्ण, चाकन, कोंडाना, ठाणे, कल्याण और भिवंडी जैसे किलों को मुल्ला अहमद से जीत कर मराठा साम्राज्य में शामिल किया. इस गतिविधि से आदिल शाह के साम्राज्य में हडकंप मच गया. शिवाजी की शक्ति को देख कर आदिल खान घबराने लगा. उसकी सेना में छत्रपति शिवाजी के पिता शाह जी भोसले सेनाध्यक्ष थे. उसने शिवाजी को रोकने के लिए शाह जी को बंधी बनाया. ये देख कर शिवाजी ने कई वर्षों तक आदिल शाह से कोई युद्ध नहीं किया.

उन वर्षों के भीतर शिवाजी ने अपनी सेना को मज़बूत किया और देशमुखों को अपने साथ जोड़ा. शिवाजी भोसले ने उन वर्षों के भीतर एक विशाल सेना तैयार कर ली थी. इस सेना को दो अलग-अलग गुटों में बांटा गया था. सेना में घुड़सवार दल और थल सेना मौजूद थी. घुड़सवार दल की सेना की कमान नेताजी पालकर के हाथों में थी. थल सेना का नेतृत्व यशाजी कल्क के पास था. उस समय शिवाजी के साम्राज्य के अंतर्गत 40 किले आते थे.

अफ़ज़ल खान से युद्ध

शिवाजी के जीवन की सबसे चर्चित और महत्वपूर्ण घटना थी. सन् 1659 में बीजापुर की बड़ी साहिबा ने अफ़ज़ल खान को 10 हज़ार सैनिकों के साथ शिवाजी राजे पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया. ऐसा माना जाता है कि अफ़ज़ल खान शिवाजी से दो गुना शक्तिशाली था. लेकिन शक्ति से ही सबकुछ नहीं होता. बुद्धिमत्ता ही मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है. अफ़ज़ल खान बहुत निर्दयी था. अफ़ज़ल खान ने युद्ध से पहले बीजापुर से प्रतापगढ़ किले तक कई मंदिरों को तोड़ा और कई बेगुनाह लोगों को मारा डाला. उसने सोचा की अगर मैं मंदिर तोड़ दूंगा तो शिवाजी बाहर आयेंगे. हुआ भी ऐसा ही शिवाजी महाराज की सेना ने अफ़ज़ल खान से छापामार तरीके से युद्ध लड़ा.

अफ़ज़ल खान को युद्ध में शिवाजी का पलड़ा भारी नज़र आया तो उसने युद्धविराम देकर शिवाजी के सामने मुलाकात का प्रस्ताव रखा. भोजन समाप्त होने के बाद अफ़ज़ल खान शिवाजी से गले मिलने के बहाने चाकू मारना चाहता था लेकिन शिवाजी ने लोहे से बना कवच पहन रखा था. जिसमे से चाकू आर-पार नहीं हो सका था. इस साजिश का अंदेशा होते ही शिवाजी ने अपने खंजर से अफ़ज़ल खान को मार डाला.

शाइस्ता खान

अफ़ज़ल खान के बाद रुस्तम ज़मान और सिद्दी जोहर को भी शिवाजी महाराज ने युद्ध में हरा दिया था. जब बीजापुर सल्तनत के पास कोई सक्षम योद्धा नहीं बचा तो बीजापुर की बड़ी बेग़म ने छठे मुग़ल शासक औरंगजेब से मदद मांगी की वे शिवाजी के खिलाफ बीजापुर सल्तनत के लिए कुछ करें. औरंगजेब ने विनती स्वीकारते हुए अपने मामा शाइस्ता खान को एक लाख पचास हज़ार सैनिकों के साथ युद्ध के लिए भेज दिया. सेना ने पुणे पर हमला कर कब्ज़ा कर लिया. शाइस्ता खान ने छत्रपति शिवाजी महाराज के निवास लाल महल पर कब्ज़ा जमा लिया. जब शिवाजी राजे को ये सूचना मिली तो वे अपने 400 सैनिकों के साथ बाराती बन कर पुणे में गए. पुणे जाकर सेना ने रात में लाल महल में प्रवेश किया. जिस समय शाइस्ता खान की सेना आराम कर रही थी तब शिवाजी की सेना ने शाइस्ता खान और कुछ जागे हुए सिपाहियों पर लाल महल में हमला कर दिया. महल के अन्दर की उस लड़ाई में शाइस्ता खान भाग निकला लेकिन शिवाजी राजे ने तलवार से शाइस्ता खान की 3 उंगलियाँ काट दी थी. और युद्ध शाइस्ता खान हार गया.